संसार के
विभिन्न देशों में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम
का
संक्षिप्त विवरण

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस १९६८

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
१७-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग, नई दिल्ली-१

१. अफगानिस्तान

अफगानिस्तान की कुल आबादी १·५० करोड़ है। इसमें मुश्किल से ३ से ५ प्रतिशत तक साक्षर हैं। पाठशाला जाने योग्य आयु वर्ग बालकों में से केवल १८ प्रतिशत प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और निरक्षर जनता का केवल ०·०१ प्रतिशत भाग साक्षरता कक्षाओं में पढ़ने आ रहा है।

सन् १९६६ में देश में ७५६ साक्षरता कक्षाएँ चल रही थीं जिनमें १८ हजार व्यक्ति पढ़ने आते थे। साक्षरता कक्षाएँ दो प्रकार की थीं : साधारण साक्षरता कक्षाएँ और उपयोगी साक्षरता कक्षाएँ। साक्षरता कक्षाएँ चलाने का मुख्य उत्तरदायित्व प्राथमिक पाठशाला शिक्षकों के कन्धों पर है। इन शिक्षकों को प्रति मास ३५ रुपये पारिश्रमिक दिया जाता है।

साक्षरतोत्तर शिक्षा कार्यक्रम महिला कल्याण समिति (विमैन वैलफेयर सोसायटी) द्वारा संचालित किया जाता है। यह समिति महिलाओं के लिये हस्तकला, पाकविद्या, सिलाई-कढ़ाई, टाइपिंग और उच्च शिक्षा विद्यालय आयोजित करती है।

२. अल्जीरिया

अल्जीरिया में निरक्षरता निवारण आन्दोलन के अन्तर्गत तीन योजनाएँ चलाई जाती हैं। एक स्ट्रौवैली में, जहाँ पाँच हजार प्रौढ़ फार्म पर काम करते हैं। इन फार्मों की व्यवस्था वे स्वयं ही करते हैं। दूसरी दो योजनाओं का उद्देश्य श्रमिकों में से निरक्षरता दूर करना है। ये श्रमिक १५ से ३५ आयु वर्ग के होते हैं। एक योजना के अंतर्गत रसायन तथा तेल उद्योग में नियुक्त २० हजार प्रौढ़ों में काम हो रहा है। दूसरी योजना में उन ५०हजार निरक्षरों को साक्षर बनाने की चेष्टा की जा रही है जो लोहे व इस्पात के कारखानों में और इसी प्रकार के अनेक दूसरे कारखानों में काम कर रहे हैं।

१५ वर्ष से अधिक आयु वर्ग की लगभग ५५ लाख

आबादी में से चवालीस लाख निरक्षर हैं, इनमें से तीस लाख उत्पादनशील आयु वर्ग अर्थात् १५ से ४४ वर्ष के बीच के हैं।

गतवर्ष यूनेस्को अग्रिम योजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय साक्षरता केन्द्र स्थापित किया गया है जहाँ कार्यविधि और उसके सिद्धान्त का विकास किया जाएगा, पठन-पाठन सामग्री का उत्पादन होगा। ग्रामीण और औद्योगिक क्षेत्रों में निरक्षरों के लिए प्रायोगिक कक्षाएँ आयोजित की जाएँगी और इस क्षेत्र में भेजे जाने वाले अध्यापकों का प्रथम दल प्रशिक्षित किया जाएगा।

३. आस्ट्रेलिया

आस्ट्रेलिया में प्रौढ़ शिक्षा का लगभग सारा खर्चा सरकार उठाती है।

विश्वविद्यालयी प्रौढ़ शिक्षा (यूनिवर्सिटी एडल्ट एजुकेशन)—न्यूसाउथ वेल्स विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू साउथ वेल्स) रेडियो विश्वविद्यालय (रेडियो यूनिवर्सिटी) चलाता है। इस विश्वविद्यालय से मुख्यत: विज्ञान तथा तकनीकी पाठ्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। न्यू इंग्लैंड विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू इंग्लैंड) ग्रामीण विस्तार पाठ्यक्रम चलाता है। दूसरे बहुत से विश्वविद्यालयों में प्रौढ़ शिक्षा विभाग हैं जो कि उदार शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम चलाते हैं।

सरकार द्वारा स्थापित परिषद् (स्टेच्युटरी बोर्ड)—१९४४ में सरकार द्वारा प्रौढ़ शिक्षा परिषद स्थापित की गई थी। इस बोर्ड के तत्वावधान में जितने भी भाषणक्रम और कक्षाएँ चलती हैं, उन पर कोई शुल्क नहीं लिया जाता।

आस्ट्रेलिया में क्रेडिट प्रोग्राम (प्रमाण-पत्र प्राप्त पाठ्यक्रम) के अतिरिक्त सभी प्रकार के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम चलाए जाते हैं। अधिकांश पाठ्यक्रम अव्यावसायिक होते हैं।

१९६० में आस्ट्रेलिया का प्रौढ़ संघ, प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्त्ताओं, शिक्षकों, और प्रशासकों के मंच के रूप में स्थापित

किया गया था । इसने वार्षिक निर्देशक सम्मेलन का काम अपना लिया है ।

४. कैनेडा

पब्लिक स्कूल एडल्ट एजुकेशन—कैनेडा की लगभग समस्त पाठशाला समितियों ने अपने अध्यापकों और स्कूल भवनों को प्रौढ़ विद्यार्थियों के उपयोग के लिए दे दिया है । प्रौढ़ शिक्षा की गतिविधियों और पाठ्यक्रमों की संख्या सैकड़ों में है । ये कार्यक्रम कला और सामान्य शिक्षा कार्यक्रम तक विस्तृत हैं ।

विश्वविद्यालयी प्रौढ़ शिक्षा—अनेक विश्वविद्यालय निरंतर शिक्षा के लिये अनेक प्रकार से ठोस योगदान दे रहे हैं । प्रौढ़ों की विशाल संख्या के लिए सवेरे-शाम कक्षाएँ चला कर और पत्र द्वारा शिक्षा दे कर उन्हें प्रमाणपत्र लेने और स्नातक बनने के अवसर प्रदान कर रहे हैं । प्रमाणपत्र न देने वाले पाठ्यक्रम और गतिविधियाँ तो बहुत ही विशाल संख्या में हैं और विविध प्रकार की हैं ।

व्यावसायिक प्रौढ़ शिक्षा—टोरोन्टो, स्काच्छवन, ब्रिटिश कोलम्बिया तथा सेन्ट फ्रान्सिस जेवियार विश्वविद्यालय व्यावसायिक प्रौढ़ शिक्षा के लिये बहुत विस्तृत कार्यक्रम चला रहे हैं।

कार्यक्रम ५—इस कार्यक्रम के अन्तर्गत बेकार प्रौढ़ों को नये कौशल सिखाने के लिए या अधिक शिक्षा देने के लिए या तकनीकी परिवर्तन के कारण विस्थापित श्रमिकों की आवश्यकता पूर्ति के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है । ये कक्षाएँ केवल उन्हीं प्रौढ़ों के लिए चलाई जाती हैं जो नेशनल एम्पलायमेंट सर्विस में बेकारों की सूची में दर्ज होते हैं और जिन्हें स्कूल छोड़े १२ महीने हो जाते हैं । इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत चलाई जाने वाली कक्षाओं में पढ़ने वाले समस्त प्रौढ़ों को शिक्षा अवधि में आर्थिक सहायता दी जाती है ।

निरक्षरता निवारण—फ्रन्टियर कालेज नामक गैर-

सरकारी संस्था कैनेडा में निरक्षरता निवारण के लिए बहुत उल्लेखनीय कार्य कर रही है। इस कार्य में इन्हें श्रमिक शिक्षकों की सहायता प्राप्त है। युवा लोगों को श्रमिक शिक्षक के रूप में भर्ती किया जाता है और उद्योगों में भेज दिया जाता है। श्रमिक शिक्षक मजदूरों के साथ सारा दिन शारीरिक परिश्रम करते हैं और रात में प्रौढ़ों को पढ़ना, लिखना, और गणित फैलाना सिखाते हैं और नागरिक शिक्षा देते हैं।

कैनेडियन प्रौढ़ शिक्षा संघ–१९३५ में स्थापित हुआ और अब तक इसकी चार शाखाएँ खुल गई हैं। ये शाखाएँ अपने-अपने प्रान्तों में प्रौढ़ शिक्षा कार्य चलाने और उसमें समन्वय करने के लिए बहुत लाभप्रद कार्य कर रही हैं।

५. डेनमार्क

डेनमार्क में प्रौढ़ शिक्षा अचानक ही जनता द्वारा शुरू कर दी गई। वहाँ इसको हमेशा सामाजिक और राजनीतिक जीवन से सम्बन्धित रखा जाता है। डेनिश प्रौढ़ शिक्षा व्यवस्था का सबसे प्रशंसनीय अंग वहाँ का फोक हाई स्कूल है। फोक हाई स्कूल के विशेष लक्षण ये हैं :—

१—फोक हाई स्कूल आवासिक होता है। शिक्षक और शिक्षार्थी सब साथ-साथ रहते हैं ताकि उन में सहभावना और सामुदायिक जीवन का विकास हो सके।

२—यहाँ की शिक्षा मुख्यतः अतकनीकी और अव्यावसायिक होती है। यहाँ के मुख्य विषय विज्ञानेतर होते है।

३—शिक्षण पद्धति वैयक्तिक होती है। यहाँ किसी प्रकार की कोई परीक्षा नहीं होती। फोक हाई स्कूल शिक्षा जीवन के नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को भी महत्व देती है।

६. जर्मनी (पश्चिमी)

जर्मनी में प्रौढ़ शिक्षा संस्थागत दृष्टिकोण से दी जाती है। इसे मुख्यतः तीन प्रकारों में विभक्त किया जाता है :—

१. प्रौढ़ शिक्षा संस्थान जिनका मुख्य उद्देश्य संगठन करना

है—इसमें सायंकालीन प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, आवासोय प्रौढ़ शिक्षा, कालेज तथा सार्वजनिक पुस्तकालय इत्यादि सम्मिलित हैं।

२. **सह धार्मिक प्रौढ़ शिक्षा संस्थाएँ**—इसमें प्रोटैस्टैन्ट और कैथोलिक एकेडमीज, कैथोलिक प्रौढ़ शिक्षा के लिए अध्ययन दल, सामाजिक गोष्ठियाँ और गिरजाघरों द्वारा संचालित पुस्तकालय इत्यादि सम्मिलित हैं।

३. **प्रौढ़ शिक्षा संस्थाएँ जो कि विशिष्ट सामाजिक और आर्थिक वर्गों का प्रतिनिधित्व करती हैं**:—इसके अन्तर्गत श्रमिक संघ पाठशाला, सहकारी पाठशाला और कृषि में व्यावसायिक संस्थाएँ चलती हैं।

जर्मनी में अधिकांशतः सभी प्रौढ़ शिक्षा कार्य गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा चलाए जाते हैं। इन्हें सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त होती है। प्रौढ़ शिक्षा में उदार शिक्षा के अतिरिक्त उद्योग धन्धों तथा व्यवसाय से सम्बन्धित शिक्षा भी दी जाती है।

७. *हांगकांग*

हांगकांग में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम मुख्यतः दो संस्थाओं द्वारा चलाये जाते हैं: शिक्षा विभाग का प्रौढ़ शिक्षा विभाग और विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम के अतिरिक्त गतिविधि (एक्सट्रा म्यूरल) विभाग। प्रौढ़ शिक्षा विभाग लगभग ५० हजार लोगों के लिए अवकाशकालीन शिक्षण की व्यवस्था और मनोरंजनात्मक गतिविधियाँ संचालित करता है।

हांगकांग विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम के अतिरिक्त गतिविधि वाला विभाग १९५६ में स्थापित हुआ था। ५,००० से भी अधिक विद्यार्थी इन अतिरिक्त गतिविधि कक्षाओं में जाते हैं। भाषाओं की अनेक कक्षाओं के अतिरिक्त ये विभाग दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान तथा समाजविज्ञान कक्षाएँ भी संचालित करता है।

८. *भारत*

१९४७-५२ के दौरान प्रौढ़ शिक्षा सरकार का उत्तरदा-

यित्व मान लिया गया था। इसे केवल अक्षर ज्ञान ही नहीं अपितु जीवनोपयोगी शिक्षा की दृष्टि से देखा जाने लगा।

समाज शिक्षा को प्रथम पंचवर्षीय योजना में भी स्थान मिला और इसके लिए ५ करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया। प्रथम पंचवर्षीय योजना में राज्य शिक्षा विभागों द्वारा संचालित प्रौढ़ साक्षरता कक्षाओं में ५५ लाख प्रौढ़ों के नाम दर्ज किए गए और विभिन्न खंडों में विकास विभाग द्वारा संचालित कक्षाओं में १२ लाख प्रौढ़ों ने नाम लिखवाया। अनुमान किया जाता है कि इनमें से ३५ लाख व्यक्तियों ने साक्षरता प्राप्त कर ली।

द्वितीय योजना में समाज शिक्षा योजनाओं के लिए १५ करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया। प्रथम योजना में स्थापित पाँच समाज शिक्षा आयोजक प्रशिक्षण केन्द्रों के अतिरिक्त आठ ऐसे और केन्द्र खोल दिए गए। जिला अधिकारियों को प्रशिक्षित करने के लिए नेशनल फन्डामैंटल एजुकेशनल सैंटर खोला गया। इस अवधि में नव साक्षरों के लिए उपयुक्त सामग्री भी उत्पादित की गई। शिक्षा मंत्रालय तथा राज्य शिक्षा विभाग के अतिरिक्त सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकार मंत्री द्वारा बनाई गई योजना के अनुसार राज्य विभागों और योजना विभागों ने भी समाज शिक्षा का कार्य किया। प्रति-रक्षा मंत्रालय भारतीय सेना के लिए अलग से कार्यक्रम संचालित करता है। केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद और केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा परिषद भी अपने-अपने कार्यक्रम चलाते हैं। कुछ गैर सरकारी संस्थाएँ भी इस कार्यक्रम में सक्रिय सहयोग दे रही हैं। उनमें से कुछ को सरकार द्वारा सहायता मिलती है और नहीं भी। हाल में ही शिक्षा मंत्रालय, कृषि व खाद्य मंत्रालय तथा संचार व प्रसार मंत्रालय के सम्मिलित प्रयास के द्वारा चुने हुए क्षेत्रों में उपयोगी साक्षरता कार्यक्रम चलाए गए हैं।

श्रमिक शिक्षा—१९५८ में सरकार द्वारा स्थापित केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा परिषद् (सैंट्रल बोर्ड आफ वर्क्स एजुकेशन) ने

लगभग २२ क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित किए हैं। यह श्रमिक शिक्षण तीन स्तरीय पद्धति पर आधारित हैं क्योंकि यह १. व्यावसायिक शिक्षा अधिकारियों की भर्ती और प्रशिक्षण, २. श्रमिक शिक्षक की भर्ती और प्रशिक्षण और ३. श्रमिकों की फैक्ट्री पर आधारित पाठ्यक्रम की योजना पर निर्भर करता है।

विश्वविद्यालयी प्रौढ़ शिक्षा—मैसूर, पूना, बम्बई तथा राजस्थान के विश्वविद्यालय सामान्य पाठ्क्रम के अतिरिक्त शिक्षा विस्तार गतिविधियाँ भी संचालित करते हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय ने नियमित रूप से पूरा प्रौढ़ शिक्षा विभाग खोल रखा है और प्रौढ़ शिक्षा में एम० ए० के लिए डिप्लोमा पाठ्यक्रम चला रखा है। भारत में ये एक अपनी तरह का अनोखा विभाग है। दिल्ली विश्वविद्यालय ने डाक द्वारा शिक्षा तथा निरन्तर शिक्षा का विभाग खोल रखा है जो कि सफल सिद्ध हुआ है।

स्वैच्छिक संस्थाएँ—भारत में प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित मुख्य स्वैच्छिक संस्था भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ है। केवल यह ही एक ऐसी संस्था है जो कि प्रौढ़ शिक्षा के सभी पक्षों से सम्बन्धित है। दूसरी मुख्य स्वैच्छिक तथा अर्ध-स्वैच्छिक संस्थाएँ निम्नलिखित हैं: बम्बई नगर समाज शिक्षा समिति, मैसूर राज्य प्रौढ़ शिक्षा समिति, लखनऊ का साक्षरता निकेतन, कलकत्ता का बंगाल समाज सेवा संगठन, उदयपुर का विद्या-भवन, राजस्थान विद्यापीठ और गुजरात विद्यापीठ।

९. ईरान

ईरान में यूनैस्को के तत्वावधान में दो आग्रिम योजनाएँ प्रयोग के लिए चलाई जा रही हैं। इनकी अवधि चार वर्ष है। १. कूजिजस्तान प्रान्त के कृषि क्षेत्र में, २. इस्फाहन में, जहाँ २६ हजार जुलाहे काम करते हैं। इन जुलाहों में ९० प्रतिशत जुलाहे ठेठ निरक्षर हैं।

पहली योजना का लक्ष्य पन्द्रह से ३४ वर्षीय आयु वर्ग की सक्रिय आबादी में से निरक्षरता दूर करना है। यह योजना दस गाँवों में चलाई जा रही है जहाँ ८० से ८५% तक निरक्षरता

व्याप्त है। शिक्षण दो चरणों में दिया जा रहा है। प्रत्येक स्तर दो वर्ष का होगा और वर्ष में आठ महोने प्रतिदिन प्रातः कक्षाएँ लगती हैं। इन योजनाओं में व्यावहारिक समस्याओं पर पाठ्य सामग्री प्रस्तुत की जाएगी।

अग्रिम योजना का दूसरा प्रयोग शहरी क्षेत्र में औद्योगिक मजदूरों पर चलाया जा रहा है। इस्फाहन में बड़ी-बड़ी अधिकांश फेक्ट्रियों ने महसूस किया है कि व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए साक्षरता कक्षाएँ आरम्भ करना आवश्यक है। ३४ कक्षाएँ पहले ही आरम्भ की जा चुकी हैं। इनमें कुल मिलाकर १२ सौ विद्यार्थी पढ़ते हैं। शिक्षकों में सुधार करके और उनकी संख्या में वृद्धि करके साक्षरता कक्षाओं को प्रोत्साहन देना और उन्हें अधिक विस्तृत करना ही अग्रिम योजना का लक्ष्य है। कक्षाएँ फैक्ट्री के भवन में ही लगती हैं और इस्फाहन विश्वविद्यालय नियमित रूप से २० मिनट का दूरदर्शन कार्यक्रम प्रसारित करता है।

पहले से ही स्थापित साक्षरता दल (लिट्रेसी कोर) जिसमें हाई स्कूल के स्नातक सम्मिलित हैं, ने १६ लाख बच्चे और प्रौढ़ पढ़ा दिए हैं और ७ हजार से भी अधिक स्कूलों को बनाने और सुधारने में वहाँ के मजदूरों की सहायता की है।

१०. जापान

जापान की १९६० की जनगणना से ज्ञात होता है कि इसकी केवल तीन प्रतिशत जनता ही निरक्षर है। जापान की इतनी ऊँची साक्षरता दर का कारण यह है कि यहाँ पिछले एक सौ वर्षों से पाठशालीय शिक्षा अनिवार्य बनी हुई है।

१९४९ में समाज शिक्षा कानून बना दिया गया। इस कानून के अनुसार स्कूलों के पाठ्यक्रम के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा के अतिरिक्त समाज शिक्षा केवल युवकों तथा प्रौढ़ों को दी जाती है।

यहाँ पाँच प्रकार के समाज शिक्षा कार्यक्रम चलाए जाते हैं :—

पहली प्रकार के कार्यक्रम युवक संघ, महिला संघ, श्रमिक संघ इत्यादि द्वारा चलाये जाते हैं। इन कार्यक्रमों में अध्ययन कक्षाएँ तथा भाषण इत्यादि होते हैं।

दूसरी प्रकार के कार्यक्रम में समाज शिक्षा, पाठशालाओं के भिन्न-भिन्न विस्तार कार्यक्रमों द्वारा दी जाती है। जो समाज शिक्षा पाठ्यक्रम प्राथमिक तथा माध्यमिक पाठशालाओं ने चला रखे थे उनकी संख्या १९६३ में ८ हजार से भी अधिक पहुँच गई थी।

तृतीय प्रकार के कार्यक्रम समाज शिक्षा संस्थाओं तथा साधनों पर आधारित हैं। उदाहरण स्वरूप पुस्तकालय, अजायब-घर इत्यादि।

चौथे कार्यक्रम में शारीरिक प्रशिक्षण तथा मनोरंजन के लिए समाज शिक्षा कार्यक्रम सम्मिलित हैं। १९६३ में ४५,०००,००० के लगभग व्यक्तियों ने इन सुविधाओं का उप-योग किया।

पाँचवें कार्यक्रम में समाज शिक्षा ज्ञान संचार के साधनों द्वारा दी जाती है जैसे : दूरदर्शन, रेडियो, फिल्म शो, पुस्तकें, समाचारपत्र और पत्रिकाएँ।

११. माली

माली में, यूनेस्को अग्रिम योजनाओं के अन्तर्गत ५ वर्षों के लिए दो प्रयोगात्मक योजनाएँ चलाई गई हैं। एक में सेगो के क्षेत्र के १००,००० से अधिक कपास तथा धान के उत्पादकों पर प्रयोग किया जा रहा है। दूसरी का लक्ष्य बमैको में और उसके चारों तरफ ६ हजार मजदूरों की उत्पादन क्षमता बढ़ाना है।

कृषि क्षेत्र में साक्षरता आन्दोलन का प्रभाव क्षेत्र के १००,००० प्रौढ़ों पर पड़ेगा। साक्षरता कार्यक्रम में कृषकों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए और कपास और धान की उत्पत्ति में वृद्धि करने के लिए खेती के नये तरीकों और खाद के उचित

उपयोगों पर महत्व दिया जायेगा। इस आन्दोलन के साथ-साथ नागरिक शिक्षा के पाठ्यक्रम भी चलाए गए हैं।

बमैको के औद्योगिक क्षेत्र में इस कार्यक्रम ने वहाँ के ८ हजार पाँच सौ निरक्षर मजदूरों में से ६ हजार को प्रभावित किया। बमैको का राष्ट्रीय साक्षरता पाठ्य सामग्री उत्पादन तथा वितरण-केन्द्र इस आन्दोलन में क्रियाशील भाग ले रहा है। यह केन्द्र पाठ्यपुस्तक, कायदे तथा श्रव्य-दृश्य सामग्री प्रस्तुत करता है।

१२. नैपाल

नैपाल में निरक्षरता ९० प्रतिशत से भी अधिक है। यहाँ प्रौढ़ शिक्षा के अधिकांश कार्यक्रमों में उपयोगी साक्षरता दी जाती है। शिक्षा मंत्रालय में प्रौढ़ साक्षरता के लिए अलग विभाग खोल दिया गया है। साक्षरता पाठ्क्रम की अवधि नौ मास है। जिसमें प्रति सप्ताह रात्रि में ६ बार कक्षाएँ लगती हैं। इसके बाद के अध्ययन के लिए ४० स्थायी प्रौढ़ केन्द्र खुले हुए हैं।

१३. फिलीपीन्स

फिलीपीन्स में १९६० में निरक्षरता २७·७ प्रतिशत थी। इसमें पढ़ते-पढ़ते बीच में छोड़ जाने वालों की संख्या एक गंभीर समस्या है। गणना की गई है कि स्कूल जाने योग्य आयु वर्ग के बालकों में से ७० प्रतिशत ने स्कूल जाना छोड़ दिया है। उनमें से बहुत से ऐसे हैं जो सार्वजनिक प्राथमिक पाठशालाओं में वापिस नहीं लौट सकते क्योंकि वे अपनी कक्षा की आवश्यक आयु से अधिक आयु के हो जाते हैं। १४ जिलों में लगभग २१ फोक स्कूल ऐसे चल रहे हैं जो साक्षरता प्रसार कर रहे हैं। फिलीपीन्स में ऐसे सामुदायिक स्कूल बहुत अधिक संख्या में हैं जो बच्चों तथा प्रौढ़ों सभी की शिक्षा का आयोजन करते हैं।

शिक्षा सामग्री उत्पादन केन्द्र—१९६० में एक शिक्षा सामग्री उत्पादन केन्द्र स्थापित किया गया। इस केन्द्र में ज्ञान संचार के विभिन्न साधनों का उत्पादन तथा वितरण किया जाता

है। जैसे पैम्फ्लैट्स, पत्रिका, पोस्टर, फिल्म तथा अन्य श्रव्य-दृश्य साधन जो कि सरकार के सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक तथा ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में सहायता देते हैं। ये केन्द्र सरकारी संस्थाओं को ज्ञान संचार साधन बनाने की योजना में तकनीकी सहायता देते हैं, साथ ही ये केन्द्र लोगों को नौकरी के दौरान प्रशिक्षण भी देते हैं और सरकारी संस्थाओं की उत्पादन तथा जानकारी की गतिविधियों में प्रभावशील समन्वय करने के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। इस समय ये सौ से भी अधिक सरकारी संस्थाओं की सेवा करते हैं।

१४. पोलैंड

पोलैंड में प्रोढ़ शिक्षा कार्यक्रम पाँच भागों में विभक्त किया जा सकता है : १. प्रोढ़ों के स्कूल चलाना, २. व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा विस्तृत स्कूल चलाना, ३. विज्ञान तथा तकनीक को लोकप्रिय बनाना, ४. संस्कृति का प्रचार करना, ५. आत्मशिक्षण तथा अध्ययन के लिए उपयुक्त साधन जुटाना।

प्रौढ़ कक्षाओं में ९० लाख से भी अधिक विद्यार्थी आते हैं। जीविकोपार्जन करने वाले व्यक्तियों के लिए १,३३० मुख्य व्यावसायिक पाठशालाएँ चलती हैं जिनमें लगभग ३० लाख व्यक्ति प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। २५० ऐसी संस्थाएँ हैं जहाँ साक्षरता और वैज्ञानिक विषयों पर भाषण दिए जाते हैं और साथ ही ७४५ तकनीकी कालेज चलाए जाते हैं। उत्पादन क्षेत्र में नियुक्त ५५ प्रतिशत कारीगर अपने कार्य-स्थल में अध्ययन करके अपनी योग्यता बढ़ा लेते हैं।

१५. सिंगापुर

सिंगापुर में प्रौढ़ शिक्षा कार्य दो मुख्य संस्थाओं द्वारा चलाया जाता हैं : १. प्रौढ़ शिक्षा परिषद्, २. सिंगापुर तथा नानयांग के विश्वविद्यालयों के शिक्षा विस्तार निभाग।

१९६० में सरकार द्वारा स्थापित प्रौढ़-शिक्षा-परिषद्

साक्षरता, भाषा, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, व्यावसायिक तथा मनोरंजन कक्षाएँ चलाती है। इसके अतिरिक्त रेडियो के माध्यम से शिक्षण और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाया जाता है।

शिक्षा विस्तार विभाग साधारण-शिक्षा-पाठ्यक्रम तथा व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम चलाते हैं। साथ ही बैंकिंग, व्यापार प्रबन्ध, कानून इत्यादि में स्नातक स्तरीय शिक्षा भी दी जाती है। स्नातकों के लिए कुछ ऐसे पाठ्यक्रम चला रखे हैं जिनका लक्ष्य विशिष्ट क्षेत्र में उनके ज्ञान में वृद्धि करना है। शिक्षकों के लिए रिफ्रेशर कोर्स चला तथा खास-खास रुचि वालों के लिए पाठ्यक्रम आयोजित किए जाने हैं।

१६. तनजानिया

तनजानिया में एक करोड़ लोगों की आबादी है। इस देश में कुल आमदनी का ४५ प्रतिशत भाग कृषि से आता है जबकि ग्रामीण जनता ८५ प्रतिशत है। अतएव यहाँ कृषि उत्पादन को प्राथमिकता दी गई है।

उपयोगी साक्षरता पर यूनेस्को की अग्रिम योजना तीन चरणों में क्रियान्वित की जाएगी : दो हजार प्रशिक्षकों की ट्रेनिग, पाठ्य सामग्री तथा प्रशिक्षण सामग्री की तैयारी तथा चुने हुए क्षेत्रों में दो साल तक प्रयोग करना। चौथे और पाँचवें साल में सफलता के मूल्यांकन के आधार पर योजना का विस्तार किया जाएगा।

दो हजार प्रशिक्षकों में से प्रत्येक प्रशिक्षक ३५ विद्यार्थियों को पढ़ाने का जिम्मा लेगा। ये विद्यार्थी सहकारी समितियों के सदस्यों में से चुने जाएँगे। पाठ्यक्रम राष्ट्रीय भाषा स्वाहिली में दो साल तक चलाए जाएँगे। प्रत्येक वर्ष में नौ महीने की पढ़ाई होती है। पहले साल में आधारभूत साक्षरता का प्रशिक्षण दिया जाएगा जिसमें पढ़ना, लिखना, गणित, नागरिक शिक्षा, स्वच्छता, पोषण ज्ञान तथा उत्पादन वृद्धि के व्यावहारिक तकनीक सिखाए जाएँगे। दूसरे वर्ष में पढ़ने-लिखने के व्यावहारिक

रूप पर तथा उन्नत कृषि के प्रशिक्षण पर महत्व दिया जाएगा।

पंचवर्षीय अवधि के अंत तक आशा की जाती है कि अग्रिम योजना दो लाख से तीन लाख व्यक्तियों के जीवन पर प्रभाव डालेगी।

१७. संयुक्त राज्य बर्तानिया

प्रौढ़ शिक्षा का अधिकतर कार्यक्रम १८ वर्ष के ऊपर के लोगों के लिए गैर औद्योगिक शिक्षा कार्यक्रम है। इस प्रकार का शिक्षण पृथक् पृथक् अथवा संयुक्त रूप से विश्वविद्यालयों के शिक्षा विस्तार विभागों (एक्स्ट्रा म्यूरल डिपार्टमेंट), श्रमिक शिक्षण संस्थाओं (वर्कर एजुकेशनल एसोसिएशन्स), स्थानीय शिक्षा विभागों, आवासिक महाविद्यालयों एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा किया जाता है।

आवासिक महाविद्यालय, विश्वविद्यालय-शिक्षण-विभाग तथा श्रमिक शिक्षण संस्थाओं जैसी गैर सरकारी संस्थाएँ शिक्षा विभाग द्वारा अनुदान के योग्य समझी जाती हैं और आर्थिक सहायता पाती हैं। इसी प्रकार जो और राष्ट्रीय संस्थाएँ राजनीति रहित शिक्षण कार्य चलाती हैं जैसा कि राष्ट्रीय महिला शिक्षण संगठन, वो भी राजकीय अनुदान का पात्र समझी जाती हैं। ऐसी अनेक संस्थाएँ स्थानीय शिक्षा विभागों से आर्थिक सहायता पाती हैं।

इसके अतिरिक्त स्थानीय शिक्षा विभाग प्रौढ़ शिक्षा का अधिकाधिक उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले रहे हैं। ये कार्य अधिकतर रात्रि पाठशालाओं तथा अशंकालीन पाठ्यक्रमों द्वारा किया जाता है। ऐसी लगभग ८ हजार शिक्षण संस्थाएँ १० लाख से भी अधिक प्रौढ़ लोगों को शिक्षण दे रही हैं। प्रौढ़ शिक्षण कार्य स्कूल आफ आर्ट, प्रौढ़ शिक्षण केन्द्रों, सामुदायिक केन्द्रों, ग्रामीण विद्यालयों, साहित्यिक संस्थाओं तथा युवक केन्द्रों में होता है। बर्तानिया में अल्पकालीन व्यावसायिक कालेज लगभग तीस की संख्या में हैं। इन कालेजों को स्थानीय शिक्षा अधिकारी

सहायता देते हैं या खुद चलाते हैं। ये पाठ्यक्रम सप्ताह के अन्त में अथवा एक पखवाड़े के अन्त में दिए जाते हैं।

८ दीर्घकालीन आवासिक कालेज, जिनमें रस्किन कालेज तथा आक्सफोर्ड कालेज भी सम्मिलित हैं, एक या दो वर्षों के पाठ्यक्रम चलाते हैं। इनमें से कुछ तो डिप्लोमा देते हैं। इन सभी कालेजों का लक्ष्य साधारण शिक्षा देना है फिर भी सबकी अपनी अलग-अलग विशेषता है।

साधारणत्या उदार शिक्षा में उच्चतम स्तर के पाठ्यक्रम यूनिवर्सिटीज के शिक्षा विस्तार विभाग (एक्स्ट्रा-म्यूरल डिपार्टमेंट ऑफ यूनिवर्सिटीज), और श्रमिक शैक्षणिक संस्था (वर्कर एजुकेशनल एसोसीएशन) प्रदान करते हैं।

१८. संयुक्त राज्य अमेरिका

संयुक्त राज्य अमेरिका में साक्षरता कक्षाओं में प्रतिवर्ष लगभग १ लाख पचास हजार व्यक्ति दाखिल होते हैं। आठवीं कक्षा के स्तर तक की शिक्षा प्रायः कई चरणों में दी जाती है।

प्रौढ़ शिक्षा के प्रसार और प्रचार के लिए अनेक संस्थाएँ काम कर रही हैं। उनमें से कुछ उल्लेखनीय संस्थाएँ ये हैं :— १. जनता प्रौढ़ शिक्षा विद्यालय (पब्लिक स्कूल ऑफ एडल्ट एजुकेशन), २. विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय विस्तार सेवा, (यूनिवर्सिटी एण्ड कालेज आफ एक्सटेंशन सर्विस), ३. पत्राचार विद्यालय (कार पैन्डैन्स कोर्सिज), ४. रेडियो तथा दूरदर्शन।

प्रौढ़ों के लिए सायंकालीन कक्षाएँ जिसमें विश्वविद्यालयी शिक्षा तथा व्यावसायिक विषय जैसे :—बढ़ईगीरी, व्यावसायिक कला, मशीनी तकनीक, विद्युत् तथा धातु कार्य इत्यादि सिखाए जाते हैं, प्राथमिक पाठशालाओं तथा उच्च विद्यालयों द्वारा चलाई जाती हैं। विश्वविद्यालय तथा कालेज इन सेवाओं को उच्च स्तर पर चलाते हैं। विश्वविद्यालय की विस्तार सेवा (एक्सटेंशन सर्विस) कार्यक्रम में वार्षिक हाजरी २० हजार तक हो जाती है। प्रतिवर्ष लाखों व्यक्ति पत्राचार द्वारा शिक्षा पाठ्यक्रम में अपना

नाम लिखाते हैं। सारे देश में स्थापित दूरदर्शन तथा रेडियो स्टेशन आधुनिक जन-शिक्षा की आवश्यकता पूर्ति के लिए दिन में और शाम को कार्यक्रम प्रसारित करते हैं।

१९. यूगोस्लाविया

यूगोस्लाविया में प्रौढ़ शिक्षा के दो चरण होते हैं। प्रथम चरण में नागरिकों को सामान्य प्रशिक्षण देते हैं और व्यक्तियों को उनकी रुचियों, रुझानों और आवश्यकताओं के अनुसार विज्ञान, टैक्नोलॉजी तथा संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में उनके ज्ञान को विस्तृत करते हैं। दूसरे चरण में मजदूर जब स्कूल छोड़कर के उत्पादन कार्य में लग जाते हैं तो उन्हें आगे प्रशिक्षण की सुविधाएँ देते हैं और जो कुछ उन्होंने स्कूल में सीखा था उस ज्ञान में वृद्धि के अवसर देते हैं।

श्रमिक विश्वविद्यालय—यूगोस्लाविया में श्रमिकों के २४२ विश्वविद्यालय हैं। ये श्रमिक विश्वविद्यालय प्रौढ़ शिक्षा विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त हैं और सैकड़ों और हजारों मजदूरों और कार्यकर्ताओं की शिक्षा और उन्नति का भार उठाते हैं। वे तकनीकी और व्यावसायिक प्रशिक्षण के अतिरिक्त सामान्य शिक्षा और सांस्कृतिक विकास पर भी ध्यान देते हैं।

विश्वविद्यालयी प्रौढ़ शिक्षा—विश्वविद्यालयों में एक ऐसा पाठ्यक्रम चलाया गया है जिसमें ऐसे प्रौढ़ प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर सकते हैं जिनके पास आवश्यकतानुसार डिप्लोमा नहीं होते। १९५८ में शैक्षणिक सुधार के अनुसार अगर कोई मजदूर प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा प्राप्त नहीं भी होता तो भी यदि वह प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर लेता है तो वह उच्च शिक्षा का अधिकारी हो जाता है।

व्यावसायिक प्रौढ़ शिक्षा—निरंतर शिक्षा अथवा स्थायी शिक्षा सिद्धान्त को स्वीकृति के साथ प्रशिक्षित व्यक्तियों की माँग निरन्तर बढ़ती जा रही है। सार्वजनिक तथा श्रमिक विश्वविद्यालयों द्वारा सेवा काल में प्रदत्त प्रशिक्षण के अतिरिक्त

यूगोस्लाव विश्वविद्यालय की फैकल्टीज आफ आर्टस ने विश्व-विद्यालय अनुशासन के रूप में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम आरम्भ कर दिए हैं। साराजीव, स्कोपजीव, प्रेस्तीना, जहरेब इत्यादि में फैकल्टीज़ आफ आर्टस में एक वर्षीय अवधि के प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम चल रहे हैं। जहरेब में फैकल्टी आफ आर्ट ने दो साल का पाठ्यक्रम चला रखा है। योगोस्लाव विश्वविद्यालय प्रौढ़ शिक्षा क्षेत्र में पी-एच० डी० की डिग्री भी देता है।

२०. जम्बिया

जम्बिया की १९६३ की जनगणना के अनुसार ३४ लाख ८ हजार की आबादी में से १२ लाख ४७ हजार प्रौढ़ ठेठ निरक्षर हैं। इसका अर्थ है कि वहाँ की प्रौढ़ आबादी के ६६ प्रतिशत व्यक्ति साक्षर नहीं हैं। स्त्रियों की साक्षरता संख्या ८० प्रतिशत तक है।

जम्बिया की सरकार ने प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम आयोजित करने का भार अपने सामुदायिक विकास विभाग को सौंप दिया है। यह विभाग एक ऐसा स्थाई प्रशिक्षित कर्मचारी दल नियुक्त करेगा जिसका काम होगा साक्षरता पाठ्य पुस्तकें उत्पादन और वितरण करना, श्रव्य-दृश्य साधनों द्वारा जनता को शिक्षित करना, शिक्षित स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं को साक्षरता शिक्षण पद्धति में प्रशिक्षित करना, विशिष्ट पाठ्य पुस्तकें उत्पादित करना, नवसाक्षरों के लिए रेडियो पर कार्यक्रम प्रसारित करना और समाचारपत्र और उपयुक्त पुस्तकें तैयार करना। १९६६ के अन्तिम सात महीनों में सारे देश के १२ साक्षरता अधिकारियों ने ५७७ स्वैच्छिक शिक्षक शिक्षित किए हैं। १९७० तक ५ लाख के लगभग लोग साक्षर हो जाएँगे। १९६४ में साक्षरता पर सरकार का वार्षिक व्यय केवल ४ हजार पौंड था लेकिन यह आशा की जाती है कि १९७० तक ५४४ हजार पौंड का खर्च आ जाएगा।

मुद्रक : आर० के० प्रिंटर्स, ८०-डी० कमला नगर, देहली-७